



222hi05

5

संवेदी प्रक्रियाएँ: अवधान और प्रत्यक्षीकरण

संवेदी संग्राहक, अवधान और प्रत्यक्षीकरण का वर्णन अपनी इंद्रियों द्वारा सूचनायें एकत्र करने और मस्तिष्क द्वारा इन्हें प्रक्रमित करने से परिचित कराता है। हमारी आँख, कान, त्वचा, नाक और जीभ पाँच इंद्रियाँ हैं जिनसे हम जानकारी प्राप्त करते हैं। हमारी इंद्रियों के दो मुख्य कार्य हैं: अस्तित्व और कामुकता। यदि हम कोई रंग या फूलों की सुन्दरता या टी.वी. की तस्वीर या यातायात की रोशनी न देख पायें तो हमारा जीवन कितना नीरस और जोखिम भरा हो जाएगा। रंग वास्तव में वस्तुओं में मौजूद नहीं होते, बल्कि रंगों की दुनिया, मस्तिष्क के संवेदी और प्रत्यक्षीकरण प्रक्रियाओं का एक उत्पाद हैं। ताजी हवा में साँस लेकर, स्वादिष्ट भोजन करके, अच्छा संगीत सुनकर या धीरे से बिल्ली या कुत्ते को स्पर्श करके हम विषयों का आनन्द लेते हैं। हमारी इंद्रियाँ अधिक से अधिक हमारा बाहरी दुनिया से संपर्क करती हैं। ये जीवन में खुशियाँ, विविधता और संतुष्टि जोड़ते हैं। संवेदना, एक प्रक्रिया है जिसमें संवेदी न्यूरॉन की उत्तेजना द्वारा तटस्थ आवेग बनते हैं जो कि शरीर के अन्दर या बाहर की स्थितियों की जानकारी के परिणामस्वरूप होता है। प्रत्यक्षीकरण, इन संवेदी अनुभवों की विस्तार से व्याख्या करता है। यह हमारे अतीत और वर्तमान के अनुभव के साथ संचालित है। इस पाठ की सहायता से आप सीखेंगे कि इंद्रियों द्वारा हम दुनिया की वास्तविकता की जानकारी कैसे लेते हैं।



उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप:

- विभिन्न इंद्रियों और संवेदी अंगों को समझ सकेंगे;
- सभी इंद्रियों में समान गुणों की जान सकेंगे;
- अवधान के कारकों को समझ सकेंगे; और
- पाँच इंद्रियों के अतिरिक्त कुछ अन्य इंद्रियों की पहचान कर सकेंगे।



5.1 संवेदना

संवेदना एक प्रक्रिया है जिसमें ऊर्जा एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित हो जाती है। उदाहरण के लिए प्रकाश, तंत्रिका आवेगों में बदल जाता है जिसके द्वारा हम संवेदी घटनाओं के संकेत अपनी प्रणाली में देते हैं, जो मस्तिष्क द्वारा प्रक्रमित होते हैं। संवेदी तंत्र जानकारी को मस्तिष्क तक पहुँचाने की क्रिया करता है। गतिक तंत्र, जानकारी को मस्तिष्क से बाहर मांसपेशियों और ग्रन्थियों में ले जाने की क्रिया करता है।

कभी-कभी आपके माता-पिता टी.वी. का बटन ऑन कर ध्वनि को अपनी श्रवण क्षमता तक समायोजित करते हैं। मान लीजिए कि आप ध्वनि को अपने अनुसार समायोजित करते हैं, लेकिन आपकी माँ कहती है कि वह सुन नहीं पा रही है तो ध्वनि बढ़ा दो। यदि आपकी माँ किसी बिन्दु पर आकर कहती है कि बस करो इसका मतलब है, कि आपकी माँ ने समायोजन का अन्तर समझ लिया है। आपकी माँ के द्वारा पहचाने गये दो उत्तेजनाओं के बीच ध्वनि के न्यूनतम अन्तर को "अंतर मापदण्ड" कहते हैं। एक उद्दीपन की पृष्ठभूमि भी हमारी संवेदना को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए आकाश में तारे दिन-रात विद्यमान रहते हैं किन्तु वो सूर्यास्त के बाद रात में ही दिखाई पड़ते हैं, क्योंकि वे सूर्य के उजाले की पृष्ठभूमि के कारण प्रतीत नहीं होते हैं।

हम सब आशाओं और अनुभवों के कारणों द्वारा निर्देशित होते हैं। संवेदना का अनुभव केवल एक हाँ/नहीं, उपस्थित/अनुपस्थित तरीका नहीं है। उदाहरण के लिए आप 4 बजे अपने घनिष्ठ मित्र के आने की आशा कर रहे हैं। 4 बजे आपका मित्र घर पहुँचता है और घंटी का बटन दबाता है। आपके अतिरिक्त घर का अन्य कोई सदस्य घंटी की आवाज पर ध्यान नहीं देता। आप अपने आशा के कारण यह आवाज सुन लेते हैं। संवेदी अनुभव उत्पन्न होने वाली न्यूनतम शारीरिक ऊर्जा को "संपूर्ण मापदण्ड" कहते हैं।

तालिका 5.1: मौलिक मानव इंद्रियाँ

इंद्रियां	उद्दीपन	इंद्रिय	संवेदना
दृष्टि	प्रकाश तरंगें	आँख	रंग, बनावट
सुनना	ध्वनि तरंगें	कान	अभिव्यक्ति शैली, संगीत, शोर
त्वचा संवेदना	बाह्य स्पर्श	त्वचा	स्पर्श, सर्दी, गर्मी, पीड़ा
सूँघना	वाष्पशील पदार्थ	नाक	गंध
स्वाद	घुलनशील पदार्थ	जिहवा	नमकीन, कड़ुआ

आइए हम प्रत्येक इंद्रिय को संक्षेप में देखें—

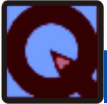
- **दृष्टि:** दृष्टि हम सबके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। अच्छी दृष्टि वाले मनुष्यों और जानवरों को जीवन में सभी बातों में लाभ है। हम अपनी आँखों के द्वारा दृष्टि का अनुभव करते हैं



जो कि एक कैमरे की तरह कार्य करती है। आँख कैमरे की तरह प्रकाश को केंद्रित करती है। सर आइजैक न्यूटन जिन्होंने सत्रहवीं सदी में गति और गुरुत्व के नियम की खोज की थी, उन्होंने यह भी खोजा कि जब सफेद रोशनी पारदर्शी समपार्श्व (प्रिज्म) के अन्दर से जाती है, इंद्रधनुष के रंग दृश्य वर्णक्रम (स्पेक्ट्रम) में अलग हो जाते हैं।

- **रंग अंधापन (रतौंधी):** रंग सबको एक ही जैसा नहीं दिखता है। कुछ लोग किसी रंग की कमी के साथ पैदा होते हैं। रंग-अंधापन रंगों में भेद करने की आंशिक या पूर्ण अक्षमता होती है। अधिकांशतः रंग अंधेपन से ग्रस्त लोगों में हरे और लाल रंग का भेद करने में परेशानी होती है।
- **श्रवण:** हमारे दैनिक जीवन में श्रवण शक्ति भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। मनुष्य के संप्रेषण में यह एक मुख्य संवेदी माध्यम है, जब किसी क्रिया द्वारा वस्तुओं में कम्पन पैदा करते हैं, ध्वनि उत्पन्न होती है। जब कम्पित वस्तुएँ माध्यम के अणुओं को आगे और पीछे धक्का देती हैं तो हम ध्वनि का अनुभव करते हैं। आवृत्ति का अर्थ है, दिए गए समय में एक तरंग में चक्रों की संख्या। इसे अक्सर चक्र प्रति सेकण्ड या हर्ट्ज कहते हैं। ध्वनि पूरे शून्य (जैसे अंतरिक्ष) में यात्रा नहीं कर सकती है क्योंकि वहाँ पर कम्पन के लिए कोई माध्यम नहीं होता है।
- **स्वरमान (आरोह, अवरोह):** ध्वनि की आवृत्ति के द्वारा ध्वनि के अवरोह या आरोह को स्वरमान कहते हैं। उच्च आवृत्ति, उच्च स्वरमान और निम्न आवृत्ति, निम्न स्वरमान को पैदा करती है।
- **तीव्र ध्वनि:** ध्वनि की तीव्रता या भौतिक गहनता तरंगों के कंपन के अधिकतम आयाम द्वारा निर्धारित होती है। ध्वनि तरंगों, जिनमें दीर्घ कंपन आयाम होता है वे तेज और जिनमें लघु कंपन होता है वे नम्र कहलाती हैं। ध्वनि की तेजी को मापने की इकाई को डेसीबल्स कहते हैं।
- **तान (स्वर):** ध्वनि तरंगों की जटिलता का गुण इसका तान होता है। वह ध्वनि जिन्हें हम शोर (कोलाहल) कहते हैं, में कई आवृत्तियाँ व्यवस्थित रूप से आपस में सम्बन्धित नहीं होती हैं।
- **शारीरिक अभिविन्यास का तात्पर्य:** इसका तात्पर्य गुरुत्व के संदर्भ में शारीरिक अभिविन्यास से है, विशेषकर हमारे सिर की स्थिति क्या है, लेटने की स्थिति में सीधा हो चाहे ऊपर –नीचे झुका हो। वेस्टीबुलर बोध ये भी बताता है कि कब हम चल रहे होते हैं या हमारी गति में परिवर्तन कैसे आता है।
- **शारीरिक स्थिति और शरीर के अंगों की गति का बोध:** गति सम्बन्धी बोध शारीरिक स्थिति और शरीर के अंगों की एक दूसरे से सम्बन्धित गति से होता है। यह वह बोध है जो हमारी चालक क्रियाओं की संवेदी जानकारी प्रदान करता है, उदाहरण के लिए, जब फोन की घंटी बजती है तो हमारे हाथ उसे उठाने के लिए कैसे चलते हैं।

- **गंध का बोध:** गंध बोध में जैविक रसायनिक क्रियाओं का एक क्रम संलग्न होता है, जो तंत्रिकीय आवेगों को उत्पन्न करता है। एक बार सक्रिय होने के पश्चात तंत्रिकीय आवेग गंध की जानकारी मस्तिष्क को भेज देता है।
- **स्वाद बोध:** स्वाद प्राप्त करने वाली कोशिकाएँ, स्वाद कलिकाओं में होती हैं जो जिह्वा के ऊपरी तल पर होती हैं। मीठे या नमकीन का अनुभव इन्हीं स्वाद कलिकाओं के कारण होता है। प्रमुख स्वाद विशेषताएँ केवल चार हैं: मीठा, खट्टा, कड़ुआ या नमकीन। स्वाद का संवेदीपन बाल्यकाल में ही विकसित हो जाता है, पर वृद्धावस्था में इसका ह्रास होने लगता है। स्वाद संवेदी कलिकाएँ, अधिक मदिरापान, धूम्रपान, अम्ल या गर्म खाने से क्षतिग्रस्त हो जाती हैं, किन्तु ये कुछ ही दिनों में बदल भी जाती हैं और स्वाद की पूर्ण रूप से हानि अत्यन्त दुष्कर होती है।
- **त्वचा के बोध:** हमारी त्वचा में तंत्रिका का अंतिम सिरा होता है जो किसी बाह्य वस्तु के सम्पर्क से उत्तेजित हो जाता है और गर्म, ठंडे या दबाव की संवेदना प्रदान करता है। दबाव की संवेदना अधिकतम मुखमंडल, जिह्वा और हाथों पर होती है और न्यूनतम हमारे पृष्ठ भाग में होती है। स्पर्श मानवीय संबंधों और भावनाओं में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **पीड़ा का बोध:** पीड़ा हानिकारक उद्दीपनों से शरीर की उत्तेजित प्रतिक्रिया है। तीव्र पीड़ा, तेज या अचानक उद्दीपन की प्रतिक्रिया होती है। व्यक्ति प्रतिदिन के जीवन में जो पीड़ा अनुभव करता है वह मनो-सामाजिक और सांस्कृतिक आदतों से भी संबंधित होती है। एक व्यक्ति कितनी पीड़ा का अनुभव करता है यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह पीड़ा से कितना जुड़ा है और अपने प्रियजनों का कितना ध्यान उसे प्राप्त होता है।



पाठगत प्रश्न 5.1

1. हमारे जीवन में दृष्टि और श्रवण की क्या भूमिका है, विवेचना कीजिए।
2. "मापदण्ड" की संकल्पना का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

5.2 प्रत्यक्षीकरण

पिछले भाग में हम संवेदना और जानकारी को मस्तिष्क तक ले जाने की प्रक्रिया के बारे में पढ़ चुके हैं। यह भाग प्रत्यक्षीकरण के बारे में है, या हम संवेदनाओं को अर्थपूर्ण प्रतिमान से कैसे उपयोग कर सकते हैं। जैसे दैनिक जीवन में हम विभिन्न घटनाओं का सामना करते हैं, मस्तिष्क



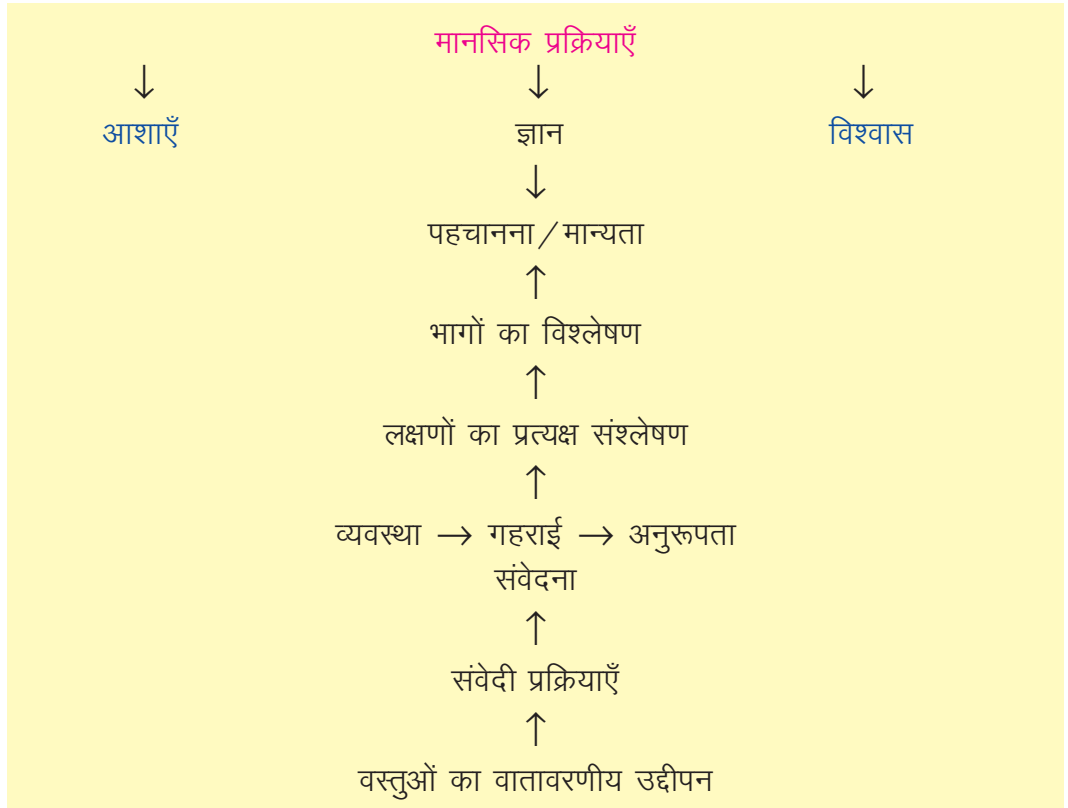


सक्रियता से चुनता है, क्रमबद्ध करता है और संवेदी जानकारी को एकत्र कर बाहर का एक चित्र उत्पन्न करता है। हमारे कुछ प्रत्यक्षीकरण जन्मजात होते हैं और कई दूसरे प्रत्यक्षीकरण, पूर्व अनुमानों के परिणामस्वरूप होते हैं। संवेदना एक अवस्था है जिसमें तंत्रिकीय क्रियाएँ, उद्दीपन की प्रकृति के बारे में जानकारी का संकेत देती हैं। प्रत्यक्षीकरण अगली अवस्था है, जिसमें एक वस्तु का एक आंतरिक प्रतिनिधित्व बनता है। यह प्रतिनिधीकरण प्रत्यक्ष करने वाले के बाह्य वातावरण का कामचलाऊ वर्णन प्रदान करता है। प्रत्यक्षीकरण साधारण संवेदी गुणों को वस्तु के प्रत्यक्ष रूप में संश्लेषित करता है जिससे कि उसे पहचाना जा सके।

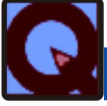
यह प्रत्यक्ष को पहचानने, मान्यता देने और अर्थ देने में सहायता करता है। प्रत्यक्षीकरण और पहचान जुड़ी हुई प्रक्रियाएँ हैं, जो अलग-अलग कार्य नहीं करती। उदाहरण के लिए एक वृत्ताकार वस्तु एक क्रिकेट की गेंद या संतरा हो सकते हैं।

प्रत्यक्षीकरण की अवस्थाएँ: संसार की भौतिक वस्तुओं को दूर का उद्दीपन (प्रेक्षक से दूर) और रेटिना पर बनने वाली दृष्टि बिम्ब को निकट उद्दीपन (प्रेक्षक के निकट) कहते हैं। प्रत्यक्षीकरण का प्रमुख कार्य निकटतम उद्दीपन के आधार पर दूर के उद्दीपन को निर्धारित करना—मन की कल्पना से यह जानने के लिए कि बाहरी दुनिया सच में कैसी है।

प्रत्यक्षीकरण में अधिक कुछ देखने को होता है, जिसमें भौतिक लक्षण जैसे, आकार और पूर्व अनुभव आते हैं।



चित्र 5.1: प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया

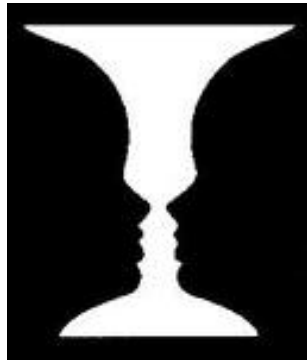


पाठगत प्रश्न 5.2

1. प्रत्यक्षीकरण की संकल्पना की व्याख्या कीजिए।
2. प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

प्रत्यक्षीकरण व्यवस्था

प्रत्यक्षीकरण एक व्यवस्थित प्रक्रिया है। प्रत्यक्षीकरण व्यवस्था के सबसे सामान्य रूप को आकृति-भूमि-व्यवस्था कहते हैं जिसमें संवेदना समूह, वस्तुओं में या आकृतियों के समूह में आ जाता है जो एक सादी पृष्ठभूमि पर उभरता है। चित्र 5.2 देखें, क्या आप एक नासिका या दो चेहरे देख रहे हैं?



चित्र 5.2: उलट जाने वाली आकृति एवं भूमि

उलटने वाला सुरापात्र आकृति-भूमि का एक अच्छा प्रदर्शन है। याद रखें कि एक पृष्ठ भूमि के विपरीत या गाढ़े भाग की आकृति का प्रत्यक्ष किया जा सकता है।

प्रत्यक्षीकरण समूहीकरण के नियम

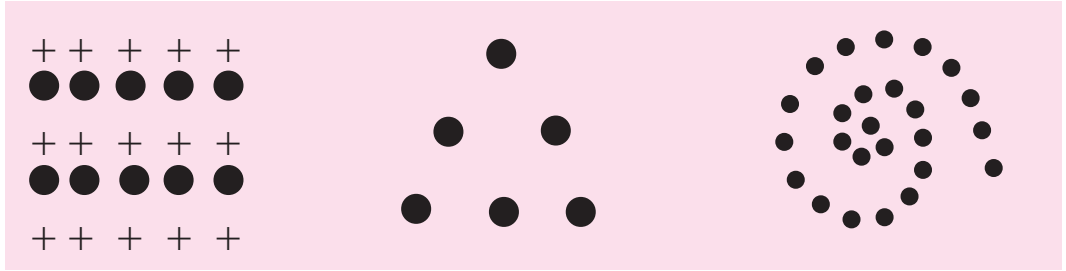
प्रत्यक्षीकरण समूहीकरण को निर्धारित करने वाले कारक निम्नवत हैं:

- a) **समीपता** : दूसरे सभी समान कारक, उद्दीपन जो एक दूसरे के निकट होते हैं वे एक समूह में जाने को प्रवृत्त होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि चार लोग एक-दूसरे के समीप खड़े हैं और पांचवा 10 फीट दूर है तो पास-पास के चार एक समूह की भाँति दिखाई देंगे और दूर वाला पांचवा एक बाहरी की भाँति दिखाई देगा। जो घटनाएँ समय और स्थान के संदर्भ में निकट होती हैं उन्हें भी एक साथ देखा जाता है।





- b) **समानता:** उद्दीपन आकृति, आकार या रंग में समान उद्दीपनों को एक समूह में रखा जाता है।
- c) **निरन्तरता:** प्रत्यक्षीकरण का झुकाव सरलता और निरन्तरता की ओर होता है। यहाँ तक कि यदि कुछ बिन्दु गोलाकार तरीके से बने हैं, तो व्यक्ति उसे एक पूर्ण वृत्त ही समझेगा।
- d) **पूर्ति:** एक प्रवृत्ति है, जो अधूरी लेकिन पूरे रूप में समरूप आकृति को पूर्ण करती है।
- e) **समान क्षेत्र:** उद्दीपन जो एक समान क्षेत्र में पाए जाते हैं, एक समूह की भाँति दिखाई पड़ते हैं।



चित्र 5.3: प्रत्यक्षीकरण समूहीकरण के नियम

प्रत्यक्ष स्थिरता

वस्तु की आकृति, आकार या चमक का प्रत्यक्षीकरण समान रहने पर भी रेटिना पर बनी प्रतिमा बदल जाती है। इसे प्रत्यक्ष स्थिरता कहते हैं और ये सभी इंद्रियों में होता है, यद्यपि अधिकतर उदाहरण दृष्टि के ही दिए गए हैं।

यदि वस्तु का दिखने वाला आकार समान रहता है, चाहे रेटिना पर बनी आकृति का आकार बदल गया हो। इसे आकार स्थिरता कहते हैं।

आकृति स्थिरता में आकृति स्थिर रहती है चाहे रेटिना की आकृति बदल गई हो।

चमक स्थिरता, इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि वस्तु की चमक वैसी ही बनी रहेगी, यदि प्रकाश की स्थितियाँ बदल भी जाएँ।

गहराई का प्रत्यक्षीकरण

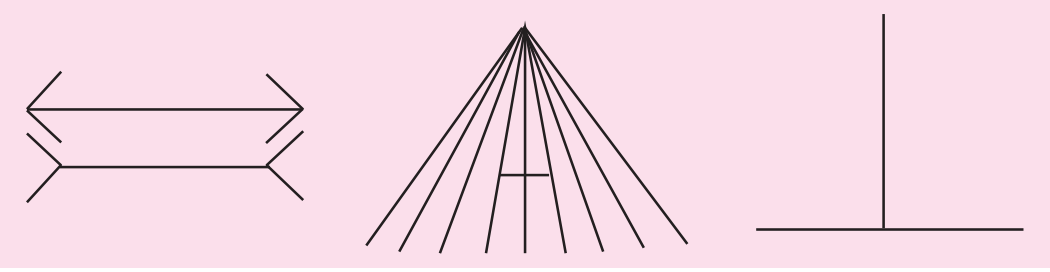
यह त्रिविमीय स्थान और यथार्थ दूरियों के निर्णय की क्षमता है। बिना गहराई के प्रत्यक्षीकरण के आप न तो मोटरसाइकिल चला सकते हैं, न कार चला सकते हैं, न गेंद पकड़ सकते हैं, न सुई में धागा डाल सकते हैं और न साधारण तौर से कक्ष में टहल सकते हैं।

विश्व एक चपटी सतह की तरह दिखेगा। गहराई के प्रत्यक्षीकरण की योग्यता अंशतः सहज (स्वभावकृत) और अंशतः सीखी जाने वाली होती है।



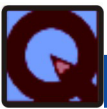
गहराई के संकेत, वातावरण और शरीर से दूरी और स्थान की मिली सूचना से मिले लक्षण हैं। संकेत जो केवल एक नेत्र पर कार्य करते हैं को एकनेत्रीय संकेत और वे जिन्हें दोनों नेत्रों की आवश्यकता होती है, उन्हें द्विनेत्रीय संकेत कहते हैं। द्विनेत्रीय संकेत, गहराई प्रत्यक्षीकरण का मूल स्रोत हैं जो कि रेटिना की असमानता (विषमता) के कारण होता है (प्रतिबिंबों की असंगति जो दाईं और बाईं आँख से पहुँचती है)। एक आँख वाले व्यक्ति को बहुत ही सीमित गहराई का प्रत्यक्षीकरण होता है।

गहराई के चित्रात्मक संकेत मिलते हैं, पेंटिंग रेखाचित्र, तस्वीर में मिलने वाली विशेषताएँ हैं, जो गहराई और दूरी की जानकारी देते हैं। ये उन वस्तुओं के आभासी प्रत्यक्षीकरण को प्रकट करता है जो हैं नहीं। उदाहरण के लिए, यदि आप दो रेलवे लाईनों के मध्य में खड़े हों, तो क्षितिज में हमें ये मिलती हुई प्रतीत होती हैं, जबकि असल में ये समानान्तर होती हैं।



चित्र 5.4: तीन शक्तिशाली भ्रम

रेखाचित्र अ, मुलर-लायर के भ्रम के नाम से जाना जाता है, निम्न रेखाएँ उच्च रेखाओं से अधिक लम्बी दिख रही हैं। असल में वे लंबाई में समान हैं। रेखाचित्र ब में, पोंजो भ्रम है जिसमें ऊपरी समतल रेखाएँ अधिक लम्बी दिख रही हैं जबकि दोनों रेखाएँ समान हैं। रेखाचित्र स को, समतल लम्बवत भ्रम कहते हैं। लम्बवत रेखा अधिक लम्बी लगती है, रूलर से जाँच सकते हैं कि ऐसा नहीं है। भ्रम विद्यमान उद्दीपन का विकृत प्रत्यक्षीकरण हैं, जबकि मतिभ्रम में प्रत्यक्षीकरण उन वस्तुओं या घटनाओं का होता है जिसमें कोई बाह्य सच्चाई नहीं होती है। भ्रम का एक उदाहरण मुलर-लेयर का भ्रम है जिसमें तीर के सिर वाली समतल रेखाएँ अन्दर की ओर तीर जैसे सिर वाली रेखाओं से छोटी प्रतीत होती हैं।



पाठगत प्रश्न 5.3

1. प्रत्यक्षीकरण व्यवस्था के विभिन्न निर्धारकों का वर्णन कीजिए।

2. प्रत्यक्षीकरण स्थिरता से आप क्या समझते हैं?

मॉड्यूल-II

मनोविज्ञान की मूलभूत प्रक्रियाएँ



टिप्पणी

3. गहराई के प्रत्यक्षीकरण का एक उदाहरण की सहायता से विवेचन कीजिए।

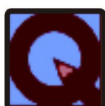
5.3 अवधान

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि गाड़ी चलाते और मोबाइल पर बात करते समय आपका ध्यान गाड़ी चलाने पर नहीं है। या जब आप अध्ययन कर रहे होते हैं तो पड़ोसी के यहाँ से आने वाली तीव्र संगीत की ध्वनि, पढ़ाई से आपका ध्यान हटा देती है। “विभाजित अवधान” से दुर्घटनाएँ हो सकती हैं जब लोग कार चलाते समय दूसरी वस्तु को देख रहे हों।

“चयनित अवधान” एक प्रक्रिया है जिसमें हम आने वाली संवेदी सूचना को प्रथमिकता देते हैं। अवधान की तीन संभावित क्रियाएँ हैं: (क) एक संवेदी पात्र (छन्नी जैसा) (ख) एक अनुक्रिया चयन जैसा और (ग) चेतना के एक द्वार जैसा।

अवधान के निर्धारक

- **भौतिक कारक** : सारी दूसरी वस्तुएँ समान होते हुए भौतिक कारक जैसे दोहराना, सहज अन्तर, आकृति, आकार और चमक हमारे अवधान पर प्रभाव डालते हैं। एक सुन्दर पैकेट या चमकीली रोशनी हमें आकर्षित करती है। इसीलिए सभी बड़ी कम्पनियाँ अपने उत्पादों का एक सुन्दर तरीके से पैकेट बनाने में काफी कुछ पैसे लगाती हैं। इसी प्रकार जिन उत्पादों का विज्ञापन नियमित रूप से समाचार पत्रों में और विद्युतीय संचार माध्यमों में आते हैं उन्हें ग्राहकों का अवधान अधिक आसानी से मिलता है, बजाए उनके जिनका विज्ञापन नहीं छपता है।
- **प्रेरक और अवधान**: प्रेरक भी हमारे प्रत्यक्षीकरण को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए यदि आप भूखे हैं तो आपका ध्यान न खाने योग्य शब्दों से अधिक खाने योग्य शब्दों पर जाएगा। विज्ञापनकर्ता और प्रचारकर्ता दो प्रेरकों का लाभ उठाते हैं जो हमारे समाज में साधारण बात है: दुश्चिन्ता और काम। कई उत्पाद जैसे कि दंतमंजन, खाद्य-उत्पाद, यहाँ तक कि मोटरगाड़ियों के विज्ञापन ग्राहकों का अवधान आकर्षित करने के लिए स्वास्थ्य संबंधी बातों पर अधिक जोर देते हैं। दूसरी तरफ फैशन वाले उत्पाद, आकर्षित करने के लिए वासनाओं के साथ खिलवाड़ करते हैं। राजनीतिक दल अधिक से अधिक लोगों तक अपना निवेदन पहुँचाने का प्रयास करते हैं।



पाठगत प्रश्न 5.4

1. अवधान की संकल्पना का विवेचन कीजिए।

2. अवधान के विभिन्न निर्धारक लिखिए।

5.4 अतीन्द्रिय प्रत्यक्षीकरण

अतीन्द्रिय प्रत्यक्षीकरण एक योग्यता है, जो उन वस्तुओं या घटनाओं का इस प्रकार प्रत्यक्षीकरण करती है जिन्हें ज्ञात संवेदी क्षमताएँ भी विस्तार से नहीं बता सकतीं।

परामनोविज्ञान, अतीन्द्रिय प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन है। जो घटनाएँ, स्वीकृत वैज्ञानिक नियमों के क्षेत्र के बाहर आती हैं, उन्हें मनोघटना कहते हैं। जब एक व्यक्ति अन्तर्ज्ञान से अनुभव करता है कि उसका भाई जो कि दूसरे नगर में है, स्वस्थ नहीं है। अतीन्द्रिय प्रत्यक्षीकरण का एक उदाहरण है। दूसरा उदाहरण हो सकता है कि जब आपको अपने नगर में भूकम्प आने का आभास होता है।

क्लेयरवायंस: यह ऐसी क्षमता है जिसमें दूरी या साधारण अवरोध, जानकारी प्राप्त करने में या घटना का प्रत्यक्षीकरण करने में, कोई बाधा नहीं डालते हैं।

टेलीपैथी: दूसरे व्यक्ति के विचारों का प्रत्यक्षीकरण या किसी अन्य के मस्तिष्क को पढ़ने की योग्यता है।

पूर्व-संज्ञान: भविष्य की घटनाओं का प्रत्यक्षीकरण या भविष्यवाणी करने की योग्यता है।

मनोगति: इच्छाशक्ति (द्रव्य के ऊपर मन) के द्वारा निर्जीव वस्तुओं पर प्रभाव डालने का प्रयास करने की योग्यता। कुछ विशेष व्यक्ति, वस्तुओं को बिना स्पर्श किए केवल एकाग्रता द्वारा ही हिला देते हैं।

कुछ मनोवैज्ञानिक अतीन्द्रिय प्रत्यक्षीकरण पर पूरी तरह से विश्वास करते हैं, किन्तु अधिकतर इसे स्वीकार नहीं करते हैं।

5.5 दैनिक जीवन में प्रत्यक्षीकरण का प्रयोग

संवेदना प्रत्यक्षीकरण और अवधान की प्रक्रिया के ज्ञान को दैनिक जीवन में प्रयोग के अनेक उपाय हैं।

- **चक्षुसाक्षी:** आप जानते होंगे कि न्याय प्रणाली में चक्षुसाक्षी का सत्य कथन ही निर्णय की कुंजी होता है। न केवल वकील और पुलिस अधिकारी चक्षुसाक्षी के सत्यकथन पर तीव्र बल देते हैं, अपितु उन्हें विश्वास भी होता है कि ये अधिकतर सत्य ही होते हैं। किन्तु बड़ी संख्या में मनोवैज्ञानिकों की राय में चक्षुसाक्षी त्रुटियाँ प्रत्यक्षीकरण में बड़ी साधारण सी बात है।





वास्तव में जब चकित, तनावग्रस्त या धमकाया गया व्यक्ति कोई धारणा बनाता है तो वह विशेषकर, विकृत होती है। अतः खोजी संस्थाओं और निर्णायकों के लिए उचित यही होगा कि चक्षुसाक्षी पर पूर्णतः निर्भर होने के बजाय अन्य साक्ष्यों को इकट्ठा करना चाहिए।

- **प्रत्यक्ष जागरूकता और सकारात्मक मनोविज्ञान:** क्या कुछ लोग दूसरों की अपेक्षा बातों को अधिक यथार्थ रूप में लेते हैं? मानवतावादी मनोवैज्ञानिक विश्वास करते हैं कि कुछ लोग स्वयं को और दूसरों को असामान्य यथार्थता से देखते हैं। जब हम परिचित उद्दीपन पर ध्यान देना छोड़ देते हैं तो वह अभ्यासिक अनुक्रिया होती है। जब एक उद्दीपन बिना किसी परिवर्तन के बार-बार होता है तो हमारी अनुक्रिया अभ्यासवत् होती है, या उसकी कमी हो जाती है। ऐसा आभास होता है कि रचनात्मक व्यक्ति बार-बार आने वाले उद्दीपनों पर भी ध्यान देता है।
- **ध्यान देने का मूल्य:** हमारी साधारण आदत बन गई है कि हम बातों को बिना उसके संभावित विभिन्नताओं पर ध्यान दिए साधारण तौर से लेते हैं। प्रत्यक्ष की स्पष्टता के लिए अधिक से अधिक ध्यान देने का प्रयास आवश्यक होता है। प्रत्यक्ष आदतों को तोड़ना और आदत निर्माण में बाधा डालना लाभप्रद परिणाम देता है। यदि आप एक ही सच्चाई को दूसरा अर्थ देकर स्वयं के प्रत्यक्षीकरणों पर प्रश्न लगाना प्रारम्भ करें तो आप अपनी क्रियाओं में अद्भुत परिणाम पा सकते हैं।



आपने क्या सीखा

- संवेदना एक प्रक्रिया है जिसमें संवेदी तंत्रिकाओं या उद्दीपनों के द्वारा तंत्रिकीय आवेग उत्पन्न होते हैं जो शरीर के भीतरी और बाह्य स्थितियों की जानकारी देते हैं।
- पाँच मुख्य इंद्रियाँ हैं: दृष्टि, श्रवण, स्पर्श, घ्राण और स्वाद। इसके साथ ही हमारी वेस्टीबुलर इंद्रिय और गति इंद्रिय, इंद्रियाँ भी हैं।
- प्रत्यक्षीकरण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक वस्तु का आन्तरिक प्रतिनिधित्व बनता है। इसमें साधारण संवेदनाओं का संश्लेषण और पूर्ण को एक अर्थ देना सम्मिलित है।
- प्रत्यक्षीकरण व्यवस्था के नियम में समीपता, समानता, निरंतरता और पूर्ति और पृष्ठभूमि के विपरीत आकृति को पहचानना सम्मिलित है।
- गहराई प्रत्यक्षीकरण दूरी के निर्णय और त्रिविमीय स्थान को देखने की योग्यता होती है। इसमें एकनेत्रीय एवं द्विनेत्रीय संकेत सम्मिलित होते हैं।
- प्रत्यक्षीकरण निरंतरता का अर्थ है कि किसी परिचित वस्तु, जिसका आकार, आकृति या रंग समान हो, का हम अर्थ निकालते हैं चाहे संवेदनाएँ कुछ अलग संकेत करें।
- अवधान, हमारी इंद्रियों का एक निर्धारित वस्तु पर ध्यान लगाने की क्षमता है। इसमें चयन करना सम्मिलित होता है और यह भौतिक और मनोवैज्ञानिक दोनों कारकों से प्रभावित होता है।

संवेदी प्रक्रियाएँ: अवधान और प्रत्यक्षीकरण

- अतीन्द्रिय प्रत्यक्षीकरण, घटनाओं और वस्तुओं को देखने की योग्यता है जिसकी व्याख्या ज्ञात संवेदी क्षमताओं द्वारा भी नहीं की जा सकती है।
- प्रत्यक्षीकरण मनोविज्ञान का ज्ञान दैनिक जीवन में अपने अवधान और प्रत्यक्षीकरण को उन्नत करने में सहायता करता है।



पाठान्त प्रश्न

1. दैनिक जीवन में प्रत्यक्षीकरण के महत्व का वर्णन कीजिए।
2. प्रत्यक्षीकरण की परिभाषा दीजिए और प्रत्यक्षीकरण व्यवस्था के नियम भी बताइए।
3. गहराई प्रत्यक्षीकरण और निरंतरता प्रत्यक्षीकरण की संकल्पना बताइए।
4. अतीन्द्रिय प्रत्यक्षीकरण से आप क्या सकझते हैं?
5. प्रत्यक्षीकरण के विभिन्न प्रयोग बताइए।



पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1

1. दृष्टि अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हम दृष्टि का अनुभव करते हैं नेत्रों की सहायता से जो एक कैमरे की तरह होते हैं।
2. दो उद्दीपनों के बीच के न्यूनतम परिवर्तन की मात्रा को अन्तर मापदण्ड कहते हैं।
3. शारीरिक ऊर्जा की निम्नतम मात्रा जो एक संवेदी अनुभव को उत्पन्न करने में लगती है, पूर्ण अवसीमा कहते हैं।

5.2

1. जब एक वस्तु का आन्तरिक प्रदर्शन होता है जिसकी पहले संवेदना बन चुकी है प्रत्यक्षीकरण है।
2. जब हम एक वस्तु देखते हैं, तो यह संवेदना हम, व्यवस्था, गहराई और उद्दीपन की समानता के रूप में करते हैं।

5.3

1. प्रत्यक्षीकरण व्यवस्था को निर्धारित करने वाले कारक, आकृति भूमि व्यवस्था, समान प्रत्यक्षीकरण और गहराई प्रत्यक्षीकरण हैं।

मॉड्यूल-II मनोविज्ञान की मूलभूत प्रक्रियाएँ



टिप्पणी

मॉड्यूल-II

मनोविज्ञान की
मूलभूत प्रक्रियाएँ

टिप्पणी

2. एक वस्तु के प्रत्यक्षीकरण में उसकी आकृति, आकार या चमक समान रहती है, चाहे रेटिना पर बना उसका प्रतिबिंब परिवर्तित हो जाए। इसे समान प्रत्यक्षीकरण कहते हैं।
3. गहराई प्रत्यक्षीकरण, त्रिविमीय स्थान और दूरी को देखने की योग्यता होती है। उदाहरण के लिए गहराई प्रत्यक्षीकरण मोटरसाइकिल या मोटरगाड़ी चलाने में और गेंद को पकड़ने में सहायता करता है।

5.4

1. अवधान एक प्रक्रिया है जिसमें हम उद्दीपन पर ध्यान देते हैं। चयनित अवधान वह प्रक्रिया है जिसमें हम एक निश्चित संवेदी सूचना को प्राथमिता देते हैं।
2. भौतिक कारक और प्रेरक अवधान के निधारक हैं।

पाठान्त प्रश्नों के लिए संकेत

1. भाग 5.1 देखें।
2. भाग 5.2 देखें।
3. भाग 5.3 देखें।
4. भाग 5.5 देखें।
5. भाग 5.6 देखें।